International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 1 || January 2026 || PP. 99-106

'बियॉन्ड बिलीफ़' के महिला पात्रों की आस्थाओं एवं संवेदनाओं का अंतर्द्वंद्व

डॉ. शालिनी श्रीवास्तव

अतिथि प्रवक्ता (हिंदी साहित्य)
क.मुं. हिंदी और भाषाविज्ञान विद्यापीठ,
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (भारत)

वी.एस. नायपॉल का नाम आधुनिक ब्रिटिश अंग्रेजी के विख्यात ग़ैर मातृभाषा-भाषी (नॉन नेटिव) साहित्यकारों में प्रमुखता से लिया जाता है। अपने लेखक जीवन के आरंभ में नायपॉल ने काल्पनिक कथाएँ लिखीं। इसकी शुरुआत उन्होंने यात्रा वृत्तांतों से की। इन यात्राओं के अनुभवों को अर्जित करते हुए उन्होंने अपने लेखन और लेखकीय दृष्टिकोण को विकसित किया। एक लेखक के तौर पर नायपॉल ने ख़ुद को विभिन्न रचना-विधाओं में प्रशिक्षित किया लेकिन उनकी बड़ी पहचान एक यात्रा-वृत्तांतकार के तौर पर स्थापित हुई। दुनिया भर में घूमते हुए उन्होंने अपनी रचनाओं के चरित्र और कथानक ढूँढे। देशों और उनकी जन-समूहों को समझने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने इतिहास, समाज और धर्म-संस्कृति के नये-पुराने संदर्भों को अपने तरीक़े से पढ़ा और परखा।

'बियॉन्ड बिलीफ़' (Beyond Belief: Islamic Excursions Among the Converted Peoples) नायपॉल के साहित्यिक जीवन के उत्तरार्ध की रचना है। इसका पहला संस्करण सन् 1998 में विंटेज बुक्स से प्रकाशित हुआ। तब से अब तक मौलिक एवं अनूदित रूप में इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। 'बियॉन्ड बिलीफ़' के उपशीर्षक से सूचना मिलती है कि यह यह अपने पुरानी धार्मिक-आस्थाओं से निकलकर इस्लाम में धर्मांतरित हो चुके लोगों की सर्वसामान्य आस्था के बारे में लिखी गई पुस्तक है। इसमें उनकी एकीकृत इस्लामिक आस्था, स्थानिक संघर्ष और उपलब्धियों का आकलन है।

नायपॉल स्पष्ट करते हैं कि यह पुस्तक लोगों के बारे में है और यह किसी विचारधारा की पुस्तक नहीं है। [i] साल 1995 में अपनी पाँच महीने की यात्रा के दौरान चार ग़ैर अरब मुस्लिम मुल्कों इंडोनेशिया, मलेशिया, ईरान और पाकिस्तान में जो अनुभव उन्होंने जुटाए, उनका इस पुस्तक में वर्णन है। यह केवल सामान्य क़िस्म की घुमक्कड़ी के यात्रा अनुभव या रिपोर्ट लेखन नहीं है। इससे पहले 1979 में भी नायपॉल इसी प्रकार की एक यात्रा कर चुके थे जिसका वृत्तांत 'अमंग द बिलीवर्स' (Among the Believers: An Islamic Journey) नामक पुस्तक में दर्ज हैं। 'बियॉन्ड बिलीफ़' उन्हीं अनुभवों का विस्तार है। अपनी पहली पुस्तक में नायपॉल ने इस्लाम धर्म का ऐतिहासिक विवरण देते हुए एक धार्मिक विचारधारा के रूप में इसकी युगांतरकारी क्षमताओ का विश्लेषण किया था। इस पुस्तक में आकर लेखक के दृष्टिकोण में पहले की तुलना में अधिक स्पष्टता और परिवक्वता आ गई है। नायपॉल को कथा-कथन के युगीन परिप्रेक्ष्य और माँग का बोध है। इसलिए वह अपने विषय और कथा-क्रम पर अधिक तटस्थता के साथ देखते और जोड़ते हैं। अपनी लेखन-यात्रा के इस पड़ाव पर आकर नायपॉल को लगता है कि यात्राओं में सबसे महत्त्वपूर्ण वे लोग हैं जिनके बीच लेखक स्वयं को पाता है। अतः कथा-क्रम में अनावश्यक टीका-टिप्पणी करने के बजाय वे 'वृत्तांत का व्यवस्थापक' होने में अपनी सफलता मानते हैं। [ii]

रचना-प्रक्रिया और गठन की दृष्टि से 'बियॉन्ड बिलीफ़' एक सामान्य यात्रा वृत्तांत नहीं है। इस विधा की दूसरी कृतियों की तरह इसमें पारंपरिक क़िस्म के वर्णन और विवरण कम हैं। इसमें ख़ुद लेखक की मौजूदगी भी बहुत कम है। लोग और उनकी ज़िंदगियाँ अधिक मुखर हैं। इसमें संदर्भ और कथ्य पर ज़ोर दिया गया है। इसकी कहानियों के स्रोत स्वतः स्फूर्त तरीक़े से खुलते हैं। हर पिछली कहानी वृत्तांत की अगली कहानी की राह खोलती है। इस प्रकार चरित्रों और घटनाओं की विविधता के बावजूद ये सब एक-दूसरे से जुड़ती हैं। सारांशतः चार ग़ैर अरब इसलामी देशों – इंडोनेशिया, ईरान, पाकिस्तान और मलेशिया पर केंद्रित इसके चार भाग मिलकर एक संपूर्ण कथावस्तु की रचना करते हैं।

'बियॉन्ड बिलीफ़' की कहानी विभिन्न देशों में रहने वाले इस्लाम मतावलंबी लोगों की स्थिति और वहाँ इस्लामीकरण के सफर और संघर्ष की कहानी है। इसके हर खंड, उपखंड में कुछ कथा चरित्र हैं जिनकी निजी कहानी प्रकारांतर से उस देश-परिवेश में इस्लामीकरण के किसी बडे संदर्भ की कहानी को बयान करती है। रोज़मर्रा के सरोकारों से दो-चार आम आदमी से लेकर वर्चस्व की समस्याओं से जूझते बड़े लोगों तक विभिन्न वर्गों, श्रेणियों के पात्र इस उपन्यास के कलेवर को समृद्ध बनाते हैं। इस संदर्भ दृष्टि से उपन्यास के महिला पात्र इसकी संवेदनात्मक बुनावट को खास मायने देते हैं। इस आलेख में बियॉन्ड बिलीफ़ के कथा-क्रम में उपस्थित महिला पात्रों की आस्थाओं और संवेदनाओं के अंतर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ आस्थाओं का जुड़ाव उनकी उस धार्मिक पहचान से है जो उनके जीवन और देश-देशांतर की विविधता के बावजूद इसलामी एकसूत्रता से बँधी है। इसके विपरीत उन सबकी संवेदनाओं का अपना संसार है जिसमें उनके ख़ालिस दुख-दर्द, संघर्ष, अपेक्षाएँ, महत्त्वाकांक्षाएँ, और प्रतिक्रिया व्यक्त करने के तरीक़े समाहित हैं। इन्हें स्त्री-विमर्श के तयशुदा साँचे में पढ़ते हुए कई बार उसे ठीक-ठाक करने की ज़रूरत महसूस होगी।

इंडोनेशिया में धार्मिक-सांस्कृतिक अस्मिता के द्वंद्व के अलावा यहाँ के इस्लामी जीवन के कुछ और भी उल्लेखनीय पहलू हैं। इस द्वीपीय देश के तीन बड़े द्वीप – जावा, सुमात्रा और मलय तीन बड़ी सांस्कृतिक अस्मिताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। नायपॉल सुमात्रा द्वीप को दो भागों में विभाजित देखते हैं। एक उत्तर में एशे और लैंडकट वाला आधुनिक सुख सुविधाओं से संपन्न राजनीतिक-धार्मिक गहमागहमी वाला सुमात्रा। दूसरा मिनंगकाबाउ, पेरियंगन और सेंट किट्स वाला सुमात्रा। 'बियॉन्ड बिलीफ़' की पहली उल्लेखनीय महिला पात्र देवी फरचूना अनवर सुमात्रा के पश्चिमी इलाके से आती है। यह दूसरा सुमात्रा 'ऊँचे, हरे-भरे ज्वालामुखीय पहाड़ों का क्षेत्र था जहाँ पहाड़ों की श्रेणियाँ थीं और उन श्रेणियों के बीच चौड़े मैदान थे।' [iii]

देवी फॉरचूना अनवर एक उच्च शैक्षिक योग्यताओं वाली आकर्षक युवा महिला थी। [iv] इंडोनेशिया में उसकी छवि एक ज़िम्मेदार बौद्धिक कार्याधिकारी और व्यस्त महिला की थी। देवी का संबंध एक उच्च शिक्षित परिवार से था जो वर्तमान में इस्लाम मतावलंबी होते हुए भी प्राचीन परंपरा से मातृवंशी था। देवी के शब्दों में, 'मेरी माँ उस वंश में आख़िरी महिला थीं। इस कारण मैं इस परिवार के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी। मुझसे इस वंश को आगे चलाने की उम्मीद की जा रही थी।' [v]

देवी की इस्लामी शिक्षा उसके मामा की देख-रेख में हुई। इसके साथ उसने इलाक़ाई जमींदारी, खेती-बाड़ी, पारिवारिक रिश्ते-नातों और ग्रामीण जीवन का गहरा अनुभव पाया। उल्लेख है – 'गाँव में रहना एक पूर्ण अनुभव था। यह केवल स्कूल जाना, क़ुरान पढ़ना या अपने परिवार या संपत्ति के वारे में जानना ही नहीं था। यह किसी चीज़ को देखने का ग्रामीण तरीका और उनके विचित्र विश्वासों के बारे में जानना था, जो हमेशा तार्किक नहीं होते थे, फिर भी बहुत महत्त्वपूर्ण थे। आप अपने जोख़िम पर उन्हें अनदेखा या रद्द कर सकते थे।' [vi]

देवी का परिवार पितापैंग नामक कुल से संबंधित था जो इस क्षेत्र के प्राचीनतम कुलों में से एक था। द्वीप पर पितापैंग कुल की वंश परंपरा सबसे पुरानी थी। इसलिए स्थानीय प्राकृतिक और आध्यात्मिक परिवेश के साथ उनके

अनुभव, अधिकार संबंध और वर्जनाएँ भी उच्चतर थीं। इस्लाम से जुड़ाव होने पर दूसरे स्थानीय कबीलों ने बहुत सी पुरानी ग़ैर इस्लामी रीतियों को आसानी से त्याग दिया लेकिन पितापैंग कुल के लिए अपनी परंपरागत सामाजिक ज़िम्मेदारी के कारण सब कुछ छोड़ना आसान नहीं था। देवी सुमात्रा के इन पुराने आदिवासी रीति-रिवाजों के साथ इस्लामी जीवनचर्या के द्वंद्व को अपने जीवन में घटित घटनाओं के विभिन्न उदाहरणों से खोलती है।

देवी का चरित्र इंडोनेशिया खंड के पुरुष पात्रों इसलिए अलग है कि वह इस्लामी आचरण और प्रतिबद्धता के संदर्भ में अपने अतीत और परंपराओं का पूर्ण निषेध ज़रूरी नहीं मानती। धर्म उसके लिए राजनीतिक या सामाजिक वर्चस्व हासिल करने और स्वार्थ सिद्धि का साधन नहीं है। वह अपनी पृष्ठभूमि के सभी पहलुओं को ज़रूरी मानती है। धार्मिक या सांस्कृतिक शुद्धता एक रूढ़िवादी कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं है। देवी कहती है, 'मेरा जीवन इसलिए समृद्ध है क्योंकि मेरे विभिन्न विश्व इसमें एकाकार हो जाते हैं।' [vii] विविधतापूर्ण समाज में इस्लाम और पारंपरिक तौर-तरीकों के द्वंद्व से जुड़े प्रश्न का समाधान वह आस्था और आदत के उचित संतुलन के रूप में तलाश करती है। उसका मानना है कि आदत को शरीयत पर निर्भर होना चाहिए।

इंडोनेशिया खंड में ही भाषा इंडोनेशिया के बड़े हस्ताक्षर, निबंधकार गोएनवान मुहम्मद के जीवन का वर्णन आता है। उसका जन्म कामपुंग के एक छोटे मछुआरे परिवार में हुआ था। बचपन में पिता की हत्या के बाद उसकी माँ ने कठिनाईयाँ झेलते हुए उसका पालन-पोषण किया। संघर्ष के एक लंबे दौर के बाद वह एक नामी पत्रकार और लेखक बना। हालांकि उपन्यास में गोएनबान की माँ का विस्तार से ज़िक्र नहीं है लेकिन गोएनबान की आला शख्सियत और वैचारिक संवेदना के निर्माण में उसकी माँ का योगदान साफ़ झलकता है।

गोएनबान की माँ जैसी ही कुछ और अनाम औरतों के संदर्भ इस खंड में मिलते हैं जिनके छोटे-छोटे जिक्र वहाँ के जीवन की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्थागत जटिलताओं, खासकर औरतों की ज़िंदगी से जुड़ी चुनौतियों और उनके निश्शब्द धैर्य का मार्मिक वृत्तांत सँजोए हुए हैं।

'बियॉन्ड बिलीफ़' के ईरान खंड में इस देश के भव्य अतीत के खंडहरों से गुज़रते हुए नायपॉल गाँव-क़स्बों तक चले जाते हैं। वैचारिक खुलेपन और प्रगतिशीलता के दौर के बाद इसलामी परंपरा के जबरदस्त प्रत्यावर्तन और शासनाधिकार तक की कहानी को बेहद संजीदगी से रिकॉर्ड गया है। ईरान के वृत्तांत में जगह-जगह पर हिजाब, नक़ाब और लबादों में पोशीदा औरतें दिखाई देती है। इन्होंने धार्मिक क्रांति और व्यवस्था के बदलाव को यथाशक्ति सहनशीलता के साथ स्वीकार कर लिया है। वहीं कहीं कुछ दूसरी औरतें भी हैं जो फैशन को प्रतिरोध की अभिव्यक्ति के तौर पर प्रदर्शित करती हैं। ग्रैंड हयात होटल में नायपॉल आभिजात्य महिलाओं के चटख फैशन बोध को देखकर कहते हैं – हमने वहाँ के बारे में जो कुछ सोचा था, उससे कहीं अधिक यह समाज खुला हुआ था। [viii]

ईरान में नायपॉल के साथ मेहरदाद नाम का व्यक्ति दुभाषिया, गाइड के तौर पर उनके साथ है। वह ईरानी समाज, संस्कृति और सत्ता के संघर्ष भरे समय की निशानियों को पढ़ने में नायपॉल की मदद करता है। इस खंड में ईरान के प्लेजर पार्कों में टहलती काले लबादे वाली औरतों और उनपर नज़र रखने वाले हरी वर्दी वाले क्रांति रक्षक गार्डों का उल्लेख है। उसी समाज में इन गार्डों के प्रतिरोध में मौजूद बासीजी वालेंटियर, कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी और आम-खास लोग भी हैं। सार्वजनिक जीवन में प्रतिबंधों के बावजूद विभिन्न कार्य स्थलों पर औरतों की मौजूदगी है। पाबंदियों के तले अपना हुनर और रोज़ी खो चुकी गायिकाएँ और रोजमर्रा के काम-काज में जुटी साधारणतम महिलाएँ हैं, जिन्होंने व्यवस्था के प्रति मौन को ही अपनी असहमति का माध्यम बना लिया है। कट्टरता के माहौल में अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए इन्होंने आज्ञाकारिता के सुरक्षित तरीके सीख लिए हैं। खुमैनी शासन में रात के वक्त लोगों की आवाजाही को नियंत्रित करने वाले क्रांति रक्षकों के बारे में की गई टिप्पणी उल्लेखनीय है - ...ईरान में इस समय वह आतंकवादियों की

नहीं, उन महिलाओं की तलाश करते थे, जिनके सिर पूरी तरह ढके नहीं होते थे। [iii] हमारी गाड़ी ड्राइव कर रही महिला ने कहा कि केवल गार्डों से बात करने के तरीके की जानकारी होनी चाहिए। एक बार जब उसे रोका गया तो उसने कहा, जैसे वह सचमुच जानना चाहती हो, 'मेरे हिजाब में क्या गड़बड़ है बेटे!' [ix]

इसी खंड के अलग अलग अध्यायों में कई पात्र सामने आते हैं – मेहरदाद की बहन जो पब्लिकेशन हाउस में नौकरी करती है, खुले विचारों का समर्थक अरश, कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी पेडार और उसकी विधवा माँ, इमामी की पत्नी, देश से विस्थापित मिसेज सेगीर। इन सबके बीच दो चरित्र विशेष रूप से आकर्षित करते हैं। पहला चरित्र, नामूज़ कोई जीवित इनसान नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक संकल्पना है।[x] नामूज़ वह हथियार है जिसे कोई रक्षक अपने हाथों में अपने समूह या अपने परिवार की औरतों की रक्षा के भाव से ग्रहण करता है। नामूज इतना खास है कि इसे वह अपनी माँ, पत्नी और बेटी के रूप में देखता है और इस मायने में यह साधारण हथियार न रहकर धर्म-रक्षा या रक्षक धर्म की सबसे इमोशनल अपील बन जाता है। दूसरा चरित्र फिरदौन की माँ का है। यह बहुत कुछ मैक्सिम ग़ोर्की की माँ से मिलता जुलता है। अपनी नितांत साधारणता में भी विशिष्ट। माँ के बारे में फ़िरदौन कहता है - वह उसी तरह की माँ थी, जो यहाँ पर होती हैं। वे अपने बेटों में विश्वास रखती हैं और उनके पुत्र जो भी करते हैं, उसमें विश्वास रखती हैं। ऐसा खासकर उन परिवारों में होता है जहाँ पिता की मृत्यु हो गई हो और पुत्र ने पिता का स्थान ले लिया हो। वहाँ माँ पुत्र के लिए रास्ता छोड़ देती है। [xi]

फ़िरदौन की माँ ईश्वर में विश्वास रखती थी, लेकिन उससे अधिक विश्वास वह इनसानियत में रखती थी। पुस्तकों पढ़ने और नया ज्ञान पाने में रुचि रखने वाली यह औरत कट्टरपंथी सत्ता के बर्ताव को लेकर बहुत निराश थी। उसे लगता था कि धर्म की राजनीति करने वाले लोगों के पीछे रहकर फिरदौन कभी कुछ बेहतर हासिल नहीं कर सकेगा। ख़ुमैनी के शासन में विभिन्न गुटों के बीच जारी संघर्ष और प्रतिरोध इस सच्चाई को अंततः पेडार भी स्वीकार करता है - ...जिस क्रांति के लिए मैंने काम किया उसने मुझे बुद्धिजीवी या मेरी माँ को एक व्यक्ति के रूप में नहीं देखा। [xii]

नायपॉल को धार्मिक आग्रहवाद की नोंक पर टिके शासन की बिडंबना सबसे बड़ा कंट्रास्ट न्यू तेहरान के शॉपिंग कॉम्पलेक्स के इर्द-गिर्द घटित होता दिखाई देता है। यहाँ क्रांति रक्षकों की आँखों के सामने व्यवस्थाओं की धज्जियाँ उड़ती हैं। तेल के कुओं से छनकर आती नई-नई दौलत के रुआब और नशे में डूबी व्यापारी घरानों की नई पीढ़ी की लड़कियाँ और मँहगी मोटर बाइकों में हर तरह का प्रतिबंधित सामान लेकर सड़कों पर घूमते युवा गार्डों को अपनी निगाहें फेर लेने का क़ायदा सिखाते हैं और कम उम्र लड़कियों के सिर के नीचे खिसके स्कार्फ़ से बाहर लटकते बाल शासन की अवज्ञा का नया प्रतीक बनकर उभरते हैं। अब इसी घटनाक्रम को आप ईरान के वर्तमान परिदृश्य के साथ फिर से घटते हुएदेख सकते हैं जहाँ शासन का दंड विधान और स्त्रियों की मुखर अवज्ञा एक-दूसरे की हिकमत को तौल रहे हैं।

नायपॉल की यात्रा का तीसरा पड़ाव पाकिस्तान है। इस खंड के दूसरे अध्याय में लाहौर में चलने वाले उत्पीडिताओं के शेल्टर होम का जिक्र आता है। यहाँ नायपॉल का सामना प्रतिरोधहीन अर्धमृत महिलाओं से होता है। इनमें से एक औरत की नाक उसके पति और भतीजे ने बेरहमी से दाग़ दी थी। ग़रीब परिवार में पली-बढ़ी और सिर्फ़ बोझ टालने के लिए शादी के बंधन में बाँध दी गई यह औरत उसकी वक़ील, फ़रज़ाना के मुताबिक सामंती समाज की शिकार और भावशून्य थी। पाकिस्तान के वृत्तांत में ऐसी ही बेनाम, सामंतशाही और जागीरशाही की शिकार औरतों के दर्दनाक किस्से हैं जो एक मुल्क के रूप में पाकिस्तान के निर्माण से पहले और बाद के दौर में समान रूप से मौजूद हैं। सांस्कृतिक शहर लाहौर की हीरा मंडी से लेकर बलूच खानाबदोशों के डेरों और बहावलपुर जैसी शरई रियासतों तक तमाम औरतों की जिंदगियाँ बहुविवाह, व्यभिचार, यौन दासता, हरमों की राजनीति, प्रतिबंधित जीवन और उत्पीडन की कहानी कहती हैं। इन्हीं के बीच कुछ छिटपुट किरदार पाकिस्तान में महिलाओं की बौद्धिक आज़ादी और उपलब्धियों के संकेत भी देते हैं।

इनमें पंजाब-सिंध की रेगिस्तानी संधि-रेखा पर बसी बहावलपुर रियासत के विलासी नवाब और उसके हरम की स्त्रियों की कहानियाँ पाठक को हिलाकर रख देती है।

उपन्यास का अंतिम खंड मलेशिया के बारे में है। इस खंड में उल्लिखित कहानियों को स्त्री विमर्श के सशक्त पाठ के तौर पर पढ़ना चाहिए। पहली कहानी क्वाला कांगसर में रहने वाला राजा शहरिमान की ज़िदगी से जुड़ी स्त्रियों की है। यद पेशे से मूर्तिकार था। उसके घर की देखभाल एक चीनी औरत करती थी जिसे बचपन में ही उसके परिवार ने त्याग दिया था। मलेशियाई चीनी परिवारों में अनिच्छित लड़कियों को त्याग देने के मामले बहुतायत से मिलते थे। ऐसी लड़कियों को मलय लोग गोद ले लिया करते थे। इन परित्यक्ता लड़कियों के के बहाने मलेशियाई समाज में चीनी-मलय अंतर्विरोध और जातीय वैमनस्य के बाद भी दोनों नस्लों के बीच आपसी संबंध की एक अंतर्धारा विकसित हो रही थी। दरअसल मलेशिया में आए हुए चीनी एक विघटित साम्राज्य और गृह युद्ध की परिस्थितियों में अपना घर छोड़ने को मजबूर हुए असुरक्षित लोग थे। देश के साथ उनके अपने सामाजिक संबंध, भाषा और संस्कृति भी पीछे छूट गए। जहाँ भी उन्हें छिटपुट जगह मिली, वे वहीं बिखरकर रह गए।

नायपॉल इन विस्थापित चीनियों के जीवन संघर्ष का ज़िक्र करते हुए उनकी धार्मिक आस्था के अंतरण की तहों में जाते हैं। इतिहास की विडंबनाओं के विरुद्ध नये सामाजिक परिवेश में चीनी परिवार अपने पुरातन आस्था के प्रतीकों का मोह छोड़कर नये धार्मिक रास्ते खोज लेते हैं। उदाहरण के लिए, क्वालालंपुर के बैंक में कंपनी सेक्रेटरी का काम करने वाला एक चीनी युवक फ़िलिप ईसाई धर्म अपना लेता है जबकि उसकी माँ चीनी अपने परंपरागत देवताओं का साथ न रहने पर जापानी बौद्ध धर्म की शरण लेती है। यानी ये स्त्रियाँ प्रतिरोधी माहौल में भी खुद को अनुकूलित कर आगे बढ़ना सीख रही हैं।

मलेशिया प्रकरण का 'नया मॉडल' अध्याय नादेजा नाम के एक सशक्त महिला किरदार, उसके परिवार और औपनिवेशिक समय में मलेशिया के ग्रामीण जन-जीवन के बारे में लिखा गया है। 40 के दशक में जब अधिकतर संपन्न मलय परिवार अशिक्षा, जुआ, शराब और शाहख़र्ची में अपना धन, ज़मीन और रुतबा गँवाकर बर्बाद हो रहे थे। वहीं कामपुंग जैसे अल्पविकसित इलाकों के कुछ अति साधारण लोग मेहनत करके आगे बढ़ रहे थे। इस अध्याय में पहला चरित्र नादेजा के पिता का है जिसने गाँव से क्वाला कांगसर के मलय कॉलेज में शिक्षा पाने तक का सफ़र अपनी योग्यता के दम पर तय किया था। दूसरा चरित्र नादेजा की माँ का है जो इसी कॉलेज की छात्रा और एक पुराने रईस परिवार की लड़की थी। तीसरा चरित्र ख़ुद नादेजा का है जो इस कहानी में नये-पुराने जीवन मॉडलों को जोड़ती नज़र आती है। एक अन्य पात्र नादेजा का पति है। दो स्त्री पात्रों, नादेजा और उसकी माँ के साथ में दो पुरुषों यानी नादेजा के पिता और उसके पति का संदर्भ महिलाओं द्वारा नियंत्रित परिवारों में पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं के लिहाज से उल्लेखनीय है।

नादेजा के माता-पिता के असमान पारिवारिक स्तर का असर उनके पारिवारिक जीवन पर हमेशा बना रहा। नादेजा ने भी अपनी माँ की तर्ज पर कामपुंग के एक महत्त्वाकांक्षी मलय युवक को शादी के लिए चुना। अपनी शादी को लेकर नादेजा का कोई खास़ आग्रह नहीं था। शादी को वह सामान्य जीवन का हिस्सा मानती थी। घर के असंतुलित माहौल की वजह से उसे अपना जीवन दिशाहीन लगता था। उसे उम्मीद थी कि होना वाला पति उसे सम्हाल लेगा। इसलिए वह उस पर एकाधिकार चाहती थी। नादेजा के नज़रिये के विपरीत उसका पति अपने जीवन-लक्ष्यों और तौर-तरीकों के बारे में दृढ़ और स्पष्ट था। वह गाँव के संकीर्ण माहौल से बचने के लिए ही शहर में आया था लेकिन अपने परिवार से उसे लगाव था। इसके विपरीत नादेजा की नज़र में पति के अलावा उसके परिवार का कोई भी सदस्य महत्त्व नहीं रखता नहीं था। नतीजतन नादेजा का पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण रहने लगा जिसका अंत अलगाव और तलाक की शक्ल में हुआ। नादेजा के मुताबिक उसका भविष्य सिर्फ़ अपने पति के साथ था। बाद में तलाक होने पर उसकी यह धारणा बदल गई।

नादेजा ने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी से जो उम्मीदें बाँध रखी थीं, वे पूरी नहीं हुईं। इसलिए एकाकी जीवन में वह उन सबकी भरपाई करना चाहती थी। नादेजा के नाना की मौत के बाद उस परिवार की पुश्तैनी संपत्ति और सामाजिक सम्मान भी घटने लगा। कई तरह की विपत्तियाँ आईं। बीस साल की उम्र होने तक सब कुछ ख़त्म हो गया। इसलिए बाद के दिनों में वह देश छोड़कर लंदन चली गई।

नादेजा की कहानी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और आग्रहों की परिणति में होने वाले पारिवारिक विघटन और कड़वे जीवन अनुभवों को बयान करती है। लंदन में नादेजा जैसी बहुत सी दूसरी मलय लड़कियाँ थीं। पारिवारिक और सांस्कृतिक जड़ों से कटी हुई ये लड़कियाँ अपने अतीत का समाधान पुरातन बोमो पंथ की साधनाओं में तलाशती हैं। मलय समाज में बोमो भारत के ओझा या तांत्रिक जैसा व्यक्ति होता है। अपनी असामान्य शक्तियों के कारण यह अपने समाज में विशेष प्रतिष्ठा रखता है। लंदन के मलय समाज में जिंदा बोमो पंथ इस बात की गवाही देता है कि मलेशिया में हुए अपार भौतिक विकास और इस्लामीकरण के बावजूद मलय समाज में पारलौकिक शक्तियों से जुड़े परंपरागत विश्वास और रीति-रिवाज़ किसी स्तर पर आज भी ज़िदा हैं।

नादेज़ा की कहानी के माध्यम से नायपॉल ने मलय समाज में कुलीन-शिक्षित लड़कियों की स्थिति, उनकी आकांक्षाओं, असुरक्षा-बोध और पारिवारिक और सामाजिक जीवन की समस्याओं को उकेरा है। कुछ और भी मुद्दे भी प्रसंगवश सामने आए हैं, जैसे - मलय समाज में अपना रुतबा खोते आभिजात्य परिवारों का वर्तमान और इनके पतन की पृष्ठभमि, ग्रामीण और शहरी जीवन-शैली का अंतर और इस्लामी जीवन पद्धति के विभिन्न प्रारुप। इस कहानी का अंतिम उल्लेखनीय तथ्य तमाम बदलावों के बावजूद एक आम मलय व्यक्ति के अंतर्मुखी बने रहने नियति को उजागर करना है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण नादेजा का पति है जिसके बारे में ख़ुद नादेजा का कहना है - 'वह अब भी नारियल के खोल के अंदर है। वह अपने आवरण से बाहर निकला और फिर उसने जो देखा, वह उसे पसंद नहीं आया।' [xiii]

अगले अध्याय, 'बोमो का पुत्र' का मंतव्य मलय समाज में विशिष्ट प्रतिष्ठा के आवरण से परे एक बोमो की असल ज़िंदगी को दिखाना है। बोमो मलेशियाई संस्कृति के उस पहलू को व्यक्त करता है जो आधुनिकता और इस्लामीकरण के प्रभाव में अपनी पहचान खो रहा है। मलय समाज में बोमो दोहरी ज़िंदगी की ज़िम्मेदारियों को जीता है। उसका अपना परिवार, शादी-संबंध, बच्चे होते हैं। अपने धार्मिक कर्मकांड से बचने वाले अतिरिक्त समय में वह भौतिक जीवन के शौक भी पूरे करता है। बोमो का घर अपने-आप में सांस्कृतिक समन्वय का केंद्र बनता है जिसके दरवाज़े बिना किसी भेदभाव के सबके लिए खुलते हैं। इसके मूल में कहीं न कहीं विभिन्न परिवेशों से आने वाली महिलाओं की उपस्थिति है। बोमो ख़ुद चीनी पिता और इंडोनेशियाई माता की संतान था। उसकी दोनों पत्नियाँ मलय-चीनी मूल की थी। माँ इंडोनेशियाई होते हुए भी मलय पूर्वज दातुक की पूजा करती थी। बोमो तीन देवताओं और दो प्रधान गुरुओं से शक्ति ग्रहण करता था। उसके सभी सत्रह बच्चे परंपरागत धर्मानुष्ठानों से परिचित थे। इनमें से दो बच्चे ईसाई थे और एक मुसलमान। बोमो का बेटा रशीद अपने स्कूल की पठान सहपाठी लड़की की प्रेरणा से इसलाम की ओर आकृष्ट होता है।

मलेशिया खंड के चौथे अध्याय का शीर्षक 'दूसरी दुनिया' है। इसमें मलेशिया के नाटककार सईद अल्वी और उनके पिता की कहानी है। सईद के दादा पेरक राज परिवार के दूर के रिश्तेदार थे लेकिन वे राज परिवार से विद्रोह करके एक साधारण लड़की से विवाह करने की प्रताड़ना जीवन भर झेलते हैं। सईद के पिता अपनी अवांछित शादी के बंधन में बँधने से पहले भाग निकलते हैं। बाद में उनकी शादी बुग़ीज राजवंश की लड़की से हुई। कामपुंग को इसी वंश के पूर्वजों ने बसाया था। लड़की को अपने क्षेत्र में राजा की पदवी मिली हुई थी। शादी के समय उसकी उम्र तेरह वर्ष की थी। उनके कुल पंद्रह संतानें हुईं। भौतिक जीवन में तरक़्क़ी और ख़ुशहाली के बावजूद सईद के पिता का झुकाव प्रकृति और अध्यात्म की तरफ होने का नतीजा नौकरी छूटने के रूप में आया जिसके बाद अगले तेईस साल उन्होंने मानसिक, पारिवारिक और

सामाजिक तनाव की स्थिति में गुज़रे। मलय भाषा में इस अवस्था को ‘गिला-इसिन’ [xiv] कहा जाता है। इसका अर्थ है – दिमाग़ के अत्यधिक सक्रिय, अध्ययनशील और आस्थावान होने के कारण आने वाला पागलपन।

सईद की माँ इस गिला-इसिन जनित बदहाली को एक दूसरे स्तर पर जी रही थी। अपने पति के मानसिक विचलन के समय वह अठारह साल की थी। उस गंभीर हालत में भी वह जानलेवा हद तक जाकर बारह बार गर्भवती हुई। उसके छह गर्भपात हुए और छह बच्चों को जन्म दिया। इनमें से दो बच्चों की जन्मते ही मौत हो गई। जीवन की कठोरतम स्थितियों के बाद भी उसने पति का साथ नहीं छोड़ा।

सईद अल्वी के मन में अपनी माँ के लिए गहरी पीड़ा थी। बियॉन्ड बिलीफ़ के आख़िरी पन्ने पर नायपॉल की टिप्पणी ख़ुद सईद के शब्दों में उसकी माँ के बारे में इस प्रकार दर्ज है - ‘वह पूरा समाज थी। अपने मलय पालन-पोषण और इस्लामी संस्कारों के कारण उसने अपने परि को वह सहयोग दिया जिससे वह दो विश्वों के के बीच आनेजाने में सफल रहे। पत्नी के बिना उन्हें पागलख़ाने में डाल दिया जाता। तब वह दो वर्ष से अधिक नहीं रह पाते। वे अपनी दोनों दुनिया में तेईस वर्षों तक रहे।’ [xv]

सईद अल्वी को एक संवेदनशील साहित्यकार बनाने में उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, ख़ास तौर पर उसकी माँ की बड़ी भूमिका रही। पढ़ाई-लिखाई में सईद की मदद तमिल मूल की एक साधारण दुकानदार महिला ने की। वह उसकी धर्ममाता जैसी हो गई। देवी फॉरचूना अनवर, शहरिमान की नौकरानी, नादेजा, बोमो की माएँ, रशीद की सहपाठिनी, सईद अल्वी और उसकी माँ... - नायपॉल के सभी कथा-चरित्र, विशेष रूप से सभी महिलाएँ (चाहे वे अपने नाम के साथ आई है या बेनामी तौर पर) अपने समय और समाज की एक-दूसरे से टकराती आवाज़ें हैं। इनकी कहानियाँ एक-दूसरे से जुदा हैं लेकिन इन सबमें सातत्य है। हिंद-मलय क्षेत्र की धर्म संस्कृति, और इस्लामी आस्था इन्हें जोड़ने वाले तंतुओं के रूप में उपस्थित हैं। इन मुखरित कहानियों के पीछे की कुछ अकथित कहानियाँ और उनके अभिप्राय हैं। जिज्ञासु पाठक उन्हें अपनी समझ से पढ़ सकता है।

नायपॉल ने अपनी रचनाओं के पीछे की प्रेरणा को ‘सांस्कृतिक सत्य की खोज’ कहा है। वे जीवन भर इसी एक धुन के साथ साहित्यिक-यात्राओं पर निकलते हैं। ‘बियॉन्ड बिलीफ़’ में समाहित उपर्युक्त कथानकों के विवेचन के आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस सत्यान्वेषी यात्रा का औपन्यासिक पाठ इसमें चित्रित महिला पात्रों के जीवन संघर्षों, उनकी आस्थाओं और संवेदनाओं के अंतर्द्वंद्व को पढ़े-परखे बिना पूरा नहीं होता।

संदर्भ –

नायपॉल, वी.एस., अनु. रानी, दीपिका. (2007). आस्था के पार (2007 सं.). नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

V.S. Naipaul: Trinidadian-British writer
https://www.britannica.com/biography/V-S-Naipaul

Beyond Belief: Islamic Excursions Among the Converted Peoples
https://www.britannica.com/topic/Beyond-Belief-Islamic-Excursions-Among-the-Converted-Peoples

French, Patrick: "Naipaul And His Three Women". Outlook India (31 March 2008)
https://web.archive.org/web/20180812083247/https://www.outlookindia.com/magazine/story/naipaul-and-his-three-women/237069

अंत टिप्पणी -

[i] आस्था के पार, प्रस्तावना,पृ. 7

[ii] वही, प्रस्तावना, पृ. 8

[iii] वही, खंड-1, अध्याय-4, पृ. 68

[iv] वही, खंड-1, अध्याय-4, पृ. 71

[v] वही, खंड-1, अध्याय-4, पृ. 73-74

[vi] वही, खंड-1, अध्याय-4, पृ. 75

[vii] वही, खंड-, अध्याय-4, पृ. 79

[viii] वही, खंड-2, अध्याय-1, पृ. 171

[ix] वही, खंड-2, अध्याय-3, पृ. 193

[x] वही, खंड-2, अध्याय-3, पृ. 198-199

[xi] वही, खंड-2, अध्याय-5, पृ. 227

[xii] वही, खंड-2, अध्याय-5, पृ. 232

[xiii] वही, खंड-4, अध्याय-4, पृ. 465

[xiv] वही, खंड-4, अध्याय-4, पृ. 493

[xv] वही, खंड-4, अध्याय-4, पृ. 500